

छत्तीसगढ़ी भाषा अरु बियाकरण

प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण हेतु



संरक्षक

श्री पी. दयानंद (IAS)

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक

श्री डी.के. बघेल

प्राचार्य

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
अछोटी, दुर्ग (छ.ग.)

समन्वय

श्री वेंकट रमण मूर्ति

व्याख्याता, डाइट दुर्ग

लेखक मंडल

श्री राम कुमार वर्मा (प्रधान पाठक) शा.पूर्व.मा.शाला कोलिहापुरी, जिला-दुर्ग, श्री द्रोण कुमार सारवा (शिक्षक) शा.पूर्व.मा.शाला चिचबोड़ वि.खं. गुण्डरदेही, जिला-बालोद, श्री जयकांत पटेल (व्याख्याता पं.) शा.उ.मा.वि. कोड़ेकसा, जिला-बालोद

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 पराथमिक किलास के पढ़ई-लिखई बर लइका मन के घर के भाखा म देबर कहिथे। हमर देस के महान बिद्वान महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद घलो पराथमिक इसकूल के पढ़ई-लिखई ल महतारी भाखा म दे के अड़बड़ समरथन करे हे। महतारी भाखा म पढ़ई-लिखई ले लइका मन के अंतस के झिझक दूरिहाथे अऊ भाखा ले जुड़े ऊकर डर ह भगा जाथे। ओमन अपन बात अऊ बिचार ल बने सरलगहा ढंग ले रख पाथे अऊ ऊकर बिकास के रद्दा ह चतरा जथे।

महतारी भाखा म पढ़ई-लिखई बर ए बात के बिसेस धियान रखे ल परही कि पाठ के पाछू के धारणा अऊ गियान के समझ ऊकर भाखा म ऊकर समझ के हिसाब ले दे जावय। हमन भाखा के गियान ले लइकामन ल जोड़त जादा ले जादा अवसर देवन। तभे हमन पढ़ई-लिखई के नवा उदीम म सिरतोन ढंग ले सफल हो पाबो।

“बियाकरण” ह कोनो भाखा के परान होथे। इही बात के हियाव करत छत्तीसगढ़ी भाखा अऊ बियाकरण ल नान्हे लइका मन के तीर उकर गाँव गुड़ी के आखर ले जोड़ के राखे के हमर एक उदीम में जेकर मन के मिलिस ओमन ला हमन सहँरावत हन। हमला बिसवास हे कि “छत्तीसगढ़ी भाषा अऊ बियाकरण” के ये माई कोठी ह सबो बर बड़ काम के होही।

डी.के. बघेल
प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
(डाइट) अछोटी, दुर्ग छ.ग.

अनुक्रमणिका

बियाकरण के विषयवस्तु

क्र.	बियाकरण के विषयवस्तु	पृष्ठ क्रमांक	क्र.	बियाकरण के विषयवस्तु	पृष्ठ क्रमांक
1	भाषा/वर्णमाला	1-3	13	शब्द रूप	41-42
2	लिपि	4	14	संधि	42-44
3	संज्ञा	5-6	15	समास	45-48
4	सर्वनाम	6-8	16	अनकार्थ शब्द	49-54
5	विशेषण	8-11	17	पर्यायवाची	55-57
6	क्रिया	12-17	18	अनेक शब्द के लिए एक शब्द	57-66
7	काल	17-18	19	विलोम शब्द	67-77
8	अव्यय	19	20	अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द	78-91
9	लिंग	20-23	21	लोकोक्ति/मुहावरें	92-96
10	वचन	24-34	22	वाक्य विचार	96-97
11	कारक	34-39	23	संदर्भ	98-101
12	शब्द रचना	40-41			

छत्तीसगढ़ी भाषा अऊ बियाकरण

भाषा

अपने मन के विचारों, भावों की बोलकर, लिखकर या संकेतों द्वारा अभिव्यक्त करना ही भाषा है।

भाषा तीन प्रकार के होते हैं। (अपन मन के बिचार, भाव ल बोल अऊ लिख परगट करई ह भाखा ए। भाखा तीन किसम के होथे :

हिन्दी

छत्तीसगढ़ी

1. सांकेतिक भाषा -
2. मौखिक भाषा -
3. लिखित भाषा -

इसारा के भाखा
मुँहअखरा भाखा
लिखे भाखा

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
1. सांकेतिक भाषा : जब हम अपने मन के भाव या विचार शरीर के अंगों के इशारों से समझाते हैं तो यह सांकेतिक भाषा कहलाती है।	कोनो किसम ले इसारा करके समझई हा इसारा के भाखा कहाथे।
2. मौखिक भाषा : जब हम अपने भाव या विचार को ध्वनि के उच्चारण द्वारा अर्थात् बोलकर अभिव्यक्त करते हैं तो उसे मौखिक भाषा कहते हैं।	अपन भाव अऊ बिचार ला कोनो बोली ले परगट करथन त ओहा मुँह अखरा भाखा होथे।
3. लिखित भाषा : अपने भाव या विचार को कुछ चिन्हों (लिपि) द्वारा प्रकट करना लिखित भाषा है।	अपन भाव अऊ बिचार ला कोनो चिन्हा (लिपि) ले परगट करथन त ओहा लिखित भाखा होथे।

छत्तीसगढ़ी भाषा

<p>छत्तीसगढ़ी भाषा का विकास भारतीय आर्य भाषाओं की मध्यवर्ती शाखा अर्धमागधी से हुआ। इस भाषा को बघेली, अवधि के साथ पूर्वी हिन्दी के अंतर्गत शामिल किया जाता है। यह छत्तीसगढ़ प्रदेश की समृद्ध भाषा है। छत्तीसगढ़ी भाषा में लोक साहित्य की प्रचुरता है। सरगुजा से बिलासपुर, दुर्ग से बस्तर अंचल तक आंचलिक प्रभावों से युक्त होते हुए संपूर्ण छत्तीसगढ़ को एक सूत्रता में यह भाषा जोड़कर रखती है।</p>	<p>छत्तीसगढ़ी भाषा के विकास भारतीय आर्य भाषा मंडोल भाग अर्धमागधी ले होय हे। ये भाषा ल बघेली, अवधि के संगे संग उत्ती डाहर के हिन्दी मं मिझारे जाथे। ये छत्तीसगढ़ के पोठ भाषा ये। छत्तीसगढ़ी भाषा ह लोक साहित्य के छलकत माई कोठी ए। सरगुजा ले बिलासपुर, दुर्ग ले बस्तर तक ले अपन अतराब के असर ले भरे होय ले ये भाषा ह छत्तीसगढ़ ला एक सुतरी मं बाँध के राखथे।</p>
---	---

वर्णमाला

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
<p>जिसका विभाजन नहीं किया जा सकता, उस ध्वनि को 'वर्ण' व उसके समूह को 'माला' कहते हैं। अर्थात् वर्णों के क्रम को 'वर्णमाला' कहते हैं।</p> <p>जैसे :- अ, इ, य, क प्रकार— वर्ण दो प्रकार के होते हैं।</p>	<p>जेला बाँटे नइ जा सके, ओ आरो ल 'वर्ण' अऊ ओकर कड़ी मन ल 'माला' केहे जाथे। माने वर्ण मनके कड़ी ल 'वर्णमाला' केहे जाथे।</p> <p>जइसे :- अ, इ, य, क किसम — वर्ण दु किसम के होथे।</p>

i) स्वर:- जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता लिए किया जाता है, उनको स्वर कहा जाता है। इनकी संख्या 11 है :-

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

ii) व्यंजन:- जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, उन्हें व्यंजन कहा जाता है :-

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	
ड़	ढ़			
क्ष	त्र	ज्ञ		

अयोगवाह :- अं, अः

i) स्वर:- जिन वर्णों में कोई दूसरा वर्ण ल संघरे बिगरे बोले जाथे, ओला स्वर केहे जाथे। येहा 10 ठन हे :-

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

ii) व्यंजन:- जिन वर्णों में स्वर ल संघरे के बोले जाथे, ओला व्यंजन वर्ण केहे जाथे। येहा 32 ठन हे :-

क	ख	ग	घ		
च	छ	ज	झ		
ट	ठ	ड	ढ	ड़	ढ़
त	थ	द	ध	न	
प	फ	ब	भ	म	
य	र	ल	व		
स	ह				
ड़	ढ़				

(ङ, ज, ण, श, ष, क्ष, ज्ञ, अं, अः, त्र, श्र बोल-लिखे नइ जाए।

जइसे :- दुःसासन = दुसासन, त्रिसूल = तिरसूल, श्रीराम = सिरीराम/सीराम

लिपि

भाषाओं को लिखने के लिए जिन संकेतों चिन्हों का उपयोग किया जाता है, उसे 'लिपि' कही जाती है। इसकी शुरुआत चित्रों से हुई है। हिन्दी को देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। यह 5वीं सदी ई.पूर्व से प्रचलित है और ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई है। इसी लिपि में संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, छत्तीसगढ़ी, नेपाली, सिंधी आदि भाषाओं को लिखी जाती है। इसकी उत्पत्ति ब्राह्मी लिपि से हुई है।

जैसे :- लड़का, मिठाई, रात, बरामदा,
दादा, कुदाली, मेंढक,
चमगादड़, तोता, मुर्गा, नमक,
टमाटर, रोटी

भाखा ल लिखे बर जेन चिनहा, बनाए जाथे, ओला 'लिपि' केहे जाथे। येकर चित्र बनाये ले सुरू होए हे। छत्तीसगढ़ी ल देवनागरी लिपि मं लिखे जाथे। येहा 5वीं सदी ई.पूर्व. ले चले आए हे। इही लिपि ले संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, नेपाली, सिंधी ल घलोक लिखे जाथे। येहा ब्राह्मी लिपि ले जनमे हे।

जइसे :- लईका, मिठई, रतिहा,
परछी, कुदारी, मेचका,
चमगेदरी, मिट्ठू, कुकरा,
नून, पताल, रोटी,

संज्ञा

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
<p>परिभाषा:— किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे:—</p> <p>व्यक्ति — राम, मोहन, राधा आदि।</p> <p>वस्तु — पुस्तक, कलम, कुर्सी आदि।</p> <p>स्थान — दिल्ली, भोपाल, छत्तीसगढ़ आदि।</p> <p>भाव — ईमानदारी, सहजता आदि।</p> <p>संज्ञा के प्रकार संज्ञा पाँच प्रकार के होते हैं —</p> <p>(1) व्यक्ति वाचक संज्ञा — जिस शब्द से किसी एक वस्तु, व्यक्ति या स्थान का बोध होता है उसे 'व्यक्ति वाचक संज्ञा' कहते हैं। जैसे — देवकी नंदन, हिन्दी पुस्तक, चांदनी चौक आदि।</p> <p>(2) जाति वाचक संज्ञा — जिन शब्दों से एक ही प्रकार की वस्तुओं या प्राणियों को बोध होता है उन्हें 'जाति वाचक संज्ञा' कहते हैं। जैसे — मनुष्य, वृक्ष, पत्थर आदि।</p> <p>(3) पदार्थ वाचक संज्ञा — जिस शब्द से किसी ऐसी वस्तु को ज्ञान हो जिसका नाप-तौल किया जा सके उसे 'पदार्थ वाचक' संज्ञा कहते हैं। जैसे — लोहा, सोना, दूध, शक्कर, चाँवल आदि।</p>	<p>परिभाषा:— कोन्हो मनखे, जिनिस, ठउर (जघा) या भाव के नाम ला 'संज्ञा' केहे जाथे। जइसे:—</p> <p>मनखे — रामलाल, रमेसर, सुखियारिन।</p> <p>जिनिस — कुरता, कलम, खटिया।</p> <p>ठउर — रइपुर, बलउद, दुरुग।</p> <p>भाव — मइलहा, सुघरई, भलई।</p> <p>संज्ञा के किसम (प्रकार) हिन्दी सहि छत्तीसगढ़ी मा घलो संज्ञा हा पाँच किसम के होथे —</p> <p>(1) व्यक्ति वाचक संज्ञा — जेन सब्द ले कोन्हो एक जिनिस, मनखे नइ ते जघा के पता चलथे, वोला 'व्यक्ति वाचक संज्ञा' केहे जथे। जइसे।— अंगरेजी कापी, सीताराम, तांदुला बाँध, गंगा मइया मंदिर।</p> <p>(2) जाति वाचक संज्ञा — जेन सब्द ले एकेच किसम के जिनिस या परानी के पता चलथे वोला 'जाति वाचक संज्ञा' केहे जाथे। जइसे — मनखे, माईलोगन, बइला, चिरई, पथरा।</p> <p>(3) पदार्थ वाचक संज्ञा — जउन सब्द ले कोन्हो अइसे जिनिस जेला हम नाप तउल सकथन तेकर पता चलथे वोला 'पदार्थ वाचक संज्ञा' केहे जाथे। जइसे — सोना, चाँदी, चँउर, दार, दूद, सक्कर, चाय।</p>

(4) समूह वाचक संज्ञा — जिस शब्द से किसी प्राणी या वस्तु के समूह को ज्ञान हो उसे 'समूह वाचक' संज्ञा कहते हैं। जैसे — सेना, जनता, कक्षा आदि।

(5) भाव वाचक संज्ञा — जिस भाव से किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, दोष, धर्म, दशा या भाव आदि का ज्ञान होता है उसे 'भाव वाचक संज्ञा' कहते हैं। जैसे — सरलता, परोपकार, सेवा, दुष्टता आदि।

(4) समूह वाचक संज्ञा — जेन सब्द ले कोन्हो परानी या जिनिस के दल, झोरका, गुच्छा के पता चलथे वोला 'समूह वाचक संज्ञा' केहे जाथे। जइसे — बरदी, बरात, कोरी, पँचहर।

(5) भाव वाचक संज्ञा — जउन सब्द ले कोन्हो मनखे या जिनिस के बने, गिनहा नई ते हाव-भाव के पता चलथे वोला 'भाव वाचक संज्ञा' केहे जाथे। जइसे — लइकई, चतुरई, हदरही, सियानी, गुरुतर मिठ निक अम्मठ।

सर्वनाम

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
<p>परिभाषा:— संज्ञा के बदले आने वाले शब्दों को 'सर्वनाम' कहते हैं। सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ है सबका नाम। अर्थात् संज्ञा का बार-बार प्रयोग न करते हुए उसके स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है उसे सर्वनाम कहा जाता है।</p> <p>सर्वनाम के प्रकार —</p> <p>(1) पुरुष वाचक सर्वनाम — वक्ता, श्रोता और अन्य (जिसके सम्बंध में बात हो) का बोध कराने वाला सर्वनाम पुरुष वाचक सर्वनाम कहलाता है।</p> <p>अ) उत्तम पुरुष — इसमें लेखक या वक्ता आता है। सर्वनाम:— मैं, मेरा, हम, हमारा।</p>	<p>परिभाषा:— संज्ञा के बदला अवइया सब्द ला 'सर्वनाम' केहे जाथे। सर्वनाम मानेसबके नाम। केहे जाय ता संज्ञा ला घेरी-बेरी न लिख बोल के ओखर जघा मे जउन सब्द ला काम मे लाए जाथे, उही ला सर्वनाम केहे जाथे।</p> <p>सर्वनाम के किसम (प्रकार)</p> <p>(1) पुरुष वाचक सर्वनाम — गोठियइया, सुनइया अउ कोन्हो आने के जानकारी देवइया सर्वनाम ल 'पुरुष वाचक सर्वनाम' केहे जाथे।</p> <p>अ) उत्तम पुरुष — ये मा लिखइया या कहइया मन आथे। सर्वनाम:— मे, में, मोर, मेहा, हम, हमन, हमर।</p>

ब) मध्यम पुरुष — इसमें पाठक या श्रोता आते हैं।

सर्वनाम:— तुम, तुम्हारा, आप, आपका।

स) अन्य पुरुष — इसमें लेखक, वक्ता, पाठक, श्रोता को छोड़कर अन्य लोग आते हैं।

सर्वनाम:— वह, वे, उनके, इनके, उसके, इसके।

(2) निजवाचक सर्वनाम — वक्ता या लेखक अपने लिए जिन सर्वनाम शब्द का प्रयोग करता है, उन्हें 'निजवाचक सर्वनाम' कहते हैं। जैसे— अपना, स्वयं, स्वतः, आप, खुद।

उदा.— मैं अपना कार्य स्वयं कर लेता हूँ।

(3) प्रश्नवाचक सर्वनाम — जिन सर्वनामों से किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के सम्बंध में प्रश्न का बोध हो, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे — कब, कहाँ, किसे, कौन, किसने, क्या आदि।

उदाहरण :— आप रायपुर कब जा रहे हैं ?

(4) सम्बंधवाचक सर्वनाम — जिन सर्वनाम शब्दों से दो भिन्न बातों का सम्बंध प्रकट होता है, उन्हें सम्बंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे— जो, जिसे, जिसका, वो, उसे, जैसे, वैसे।

उदाहरण :— उसे चार रोटी देना।

(5) निश्चयवाचक सर्वनाम — किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु, घटना या कर्म के लिए प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे— यह, ये, इन्हें, इनका, वह, वे, उन्हे, उनका।

उदा.— वह अच्छा है।

ब) मध्यम पुरुष — ये मा पढ़इया अउ सुनइया मन आथे।

सर्वनाम :— ते, तँय, तँहर, तोर, तुम्हार, तुमन, तुइमन, तुम्हारमन।

द) अन्य पुरुष — येमा लिखइया, गोठियइया, पढ़इया, सुनइया ला छोड़के कोन्हों आने हा आथे।

सर्वनाम:— ए, ये, इन, एकर, ए—मन, ई—मन, इन, ए—कर, इन्हर।

(2) निजवाचक सर्वनाम — गोठियइया या लिखइया अपन बर जोन सर्वनाम सब्द ला काम में लाथे वोला 'निजवाचक सर्वनाम' केहे जाथे। जइसे— अपन, सियम, खुदे, सवांगे।

उदा.— अपन बुता में खुदे कर डारथों।

(3) प्रश्नवाचक सर्वनाम — जेन सर्वनाम ले कोन्हों मनखे, जिनिस या घटना ले सम्बंधित प्रश्न के बात पता चलथे वोला प्रश्नवाचक सर्वनाम केहे जाथे। जइसे— कब, कहाँ, केती, कोन हा, कोन ला, केते कर, कइसे।

उदाहरण :— आपमन रइपुर कब जावत हौं ?

(4) सम्बंधवाचक सर्वनाम — जेन सर्वनाम सब्द ले दू अलग-अलग बात के जुड़े के पता चलथे, वोला सम्बंधवाचक सर्वनाम केहे जाथे। जइसे— जउन-तउन, जेखर-तेखर, जइसन-तइसन, जे, जेहर, जोन, जिन, जउन, ते, ते—हर, तरुन।

उदाहरण :— जेन आही तेन पाही।

(5) निश्चयवाचक सर्वनाम — कोन्हो तय मनखे, जिनिस, घटना या करम बर लगे सर्वनाम निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाथे। जइसे— ए, एहर, वो, वोहर, एकर, वोकर।

उदा.— वो ओगगर हे।

(6) अनिश्चयवाचक सर्वनाम — जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
जैसे— कोई, कुछ।
उदा.— कोई आ रहा है।

(6) अनिश्चयवाचक सर्वनाम — जेन सर्वनाम सब्द ले कोन्हों तय जिनिस के पता नइ चले, वोला अनिश्चयवाचक सर्वनाम केहे जाथे।
जइसे— कोन्हों, कोइ, कुछु।
उदा.— मे कुछु खाय रतेव।

विशेषण

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
<p>जिन शब्दों से संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण-दोष या विशेषता का पता चलता है, उसे 'विशेषण' कहा जाता है। विशेषण के प्रयोग से विशेषता पूरी तरह से मर्यादित व अर्थ सीमित हो जाती है।</p> <p>जैसे:— i) रमौतीन 'पतली' शरीर की है। ii) मेरे पास 'लाल' गुलाब है।</p> <p>यहाँ 'पतली' व 'लाल' शब्द संज्ञा की विशेषता एकदम से मर्यादित कर दिए हैं।</p> <p>विशेषणों की रचना :—</p> <p>रूप-रचना की दृष्टि 'हिन्दी' में विशेषणों के दो भाग किये जा सकते हैं :—</p> <p>क) मौलिक विशेषण :— जो शब्द उपसर्ग, प्रत्यय या अन्य शब्दों को जोड़े बिना ही संज्ञा या सर्वनाम की किसी विशेषता को बताते हैं, उसे 'मौलिक विशेषण' कहते हैं।</p> <p>जैसे :— कच्चा ठंडा</p>	<p>जेन सब्ध संज्ञा अउ सर्वनाम के गुन-दोष अउ बिसेसता ल बताथे, ओला बिसेसन केहे जाथे। बिसेसन ककरो बिसेसता सब्बो किसम ले मरजाद मं हो जाथे।</p> <p>जइसे :— i) रमौतीन ह 'पातर' देह के हे। ii) मोर मेर 'लाल' गुलाब हे।</p> <p>इहाँ 'पातर' अऊ 'लाल' सब्द संज्ञा के बिसेसता ल एकदमेच मरजाद मं रख दे हे।</p> <p>बिसेसन मनके रचना (सिरजन) :—</p> <p>रूप-रचना के मुताबिक 'छत्तीसगढ़ी' में बिसेसन मनके दु भाग केहे जा सकथे :—</p> <p>क) निमगा बिसेसन :— जेन सब्द ल उपसर्ग, प्रत्यय नइते दूसर सब्द के बिगर संज्ञा अऊ सर्वनाम के बिसेसता ल बताथे ओला निमगा बिसेसन केहे जाथे।</p> <p>जइसे :— कइच्चा/काचा जूड़</p>

ख) यौगिक विशेषण :- जो शब्द उपसर्ग, प्रत्यय या अन्य शब्द के साथ जुड़ने से विशेषण बनते हैं, उन्हें 'यौगिक विशेषण' कहते हैं। ये मूल शब्द की विशेषता को व्यक्त करते हैं।

जैसे :- देन + दार - देनदार (देनेवाला)
पालन + हार - पालनहार (पालनेवाला)
प्र + चार - प्रचार (फैलाना)
अध + मरा - अधमर (घायल)
पहरा + दार - पहरादार (पहरा देनेवाला)

विशेषण के प्रकार :-

विशेषणों का परिणाम, गुण एवम् संख्या के आधार पर पाँच प्रकार है।

- 1) गुणवाचक विशेषण
- 2) संख्यावाचक विशेषण
- 3) परिणामवाचक विशेषण
- 4) संकेतवाचक विशेषण
- 5) व्यक्तिवाचक विशेषण

आइए, अब इन प्रकारों को थोड़ा विस्तार से जानें।

1) गुणवाचक विशेषण :- जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण या दोष को व्यक्त करते हैं, उसे गुण वाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे:-(क) गिलास में 'गर्म' दूध है।

ख) यौगिक बिसेसन :- जेन सब्द उपसर्ग, प्रत्यय नइ ते दूसर सब्द के संग जुरे ले बिसेसन बनथे। ओला 'मिझरा' केहे जाथे। येहा निमगा सब्द के बिसेसता ल परगट करथे।

जइसे :- देह + उतार - देहउतार (सुस्त बैठे रहने वाला।)

कन + घटोर - कनघटोर (सुनकर अनसुना करने वाला)
जोतन + दार - जोतनदार (जुताई करने वाला)
गुना + गार - गुनागार (गुनाह करने वाला)
तारन + हार - तारनहार (पार लगाने वाला)

बिसेसनमन के परिनाम गुन अऊ गिनती के मुताबिक पाँच किसम हे।

- 1) गुणवाचक बिसेसन
- 2) संख्यावाचक बिसेसन
- 3) परिणामवाचक बिसेसन
- 4) संकेतवाचक बिसेसन
- 5) मनखेवाचक बिसेसन

आवव, अब ये प्रकार मन ल थोरिक बिस्तार ले जानन।

1. गुणवाचक बिसेसन:- जे सब्द संज्ञा अउ सर्वनाम के गुन दोस ल परगट करथे, ओला गुनवाचक बिसेसन केहे जाथे।

जइसे :- (क) गिलास मं 'गरम' दूध हे।

- (ख) बगीचा में 'लाल' गुलाब है।
 (ग) पेड़ के फल 'मीठे' हैं।
 (घ) नदी का पानी 'साफ' है।

गर्म
 खाली
 सामने
 पीछे

- (ख) बगीचा में 'लाली' गुलाब है।
 (ग) रुख के फर 'मीठ' है।
 (घ) नंदिया के पानी 'फरी' है।

तात
 रिता/रित्ता
 आघू
 पाघू

2) संख्यावाचक विशेषण :- जिन शब्दों से किसी वस्तु की संख्या संबंधी विशेषता प्रकट होती है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

- जैसे :- (क) मेरे पास चार पुस्तक है।
 (ख) कल चार मेहमान आये।
 (ग) गुच्छा में बीस केले थे।
 (घ) मुझे सतरंगी फीता खरीदनी है।

3) परिणामवाचक विशेषण :- जिस शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की नाप-तौल से जुड़ी विशेषता प्रकट होती है, उसे परिणामवाचक विशेषण कहते हैं।

2) संख्यावाचक बिसेसन :- जेन सब्द ले कोनो जिनिस के गिनती के बारे में बिसेसता परगट होथे, ओला संख्यावाचक बिसेसन केहे जाथे।

- जैसे :- (क) मोर मेर चार किताब हे।
 (ख) काली चार सगा आइन।
 (ग) झोथ्या में बीस केरा रिहिस।
 (घ) मोला सतरंगी फीता बिसाना हे।

3) परिणामवाचक बिसेसन :- जेन सबद मन ले संज्ञा अऊ सर्वनाम के नाप-जोख ले जुड़े बिसेसता परगट होथे, ओला परिणामवाचक बिसेसन केहे जाथे।

जैसे :- (क) घर में रोज तीन लीटर दूध लगता है।
 (ख) मेरी प्यास दो गिलास पानी से बूझेगी।
 (ग) घर से स्कूल दो किलामीटर है।
 (घ) इस साड़ी की लम्बाई पाँच मीटर है।

4. संकेतवाचक विशेषण :- जब किसी वाक्य में सर्वनाम शब्द विशेषण की भाँति प्रयोग किया जाता है, तब वह संकेतवाचक विशेषण कहलाता है। इसमें किसी अन्य की ओर संकेत मिलता है।

जैसे :-

क) वहाँ 'कौन' गा रहा है ?
 ख) 'यह' कमीज मेरे भाई की है।
 ग) 'किसका' घोड़ा जा रहा है।
 घ) 'उसे' रायपुर जाना पड़ेगा।

5. व्यक्तिवाचक विशेषण : जो शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बनते हैं उसको व्यक्तिवाचक विशेषण कहा जाता है।

जैसे:

क) मैं मैत्रीबाग घूमने जा रहा हूँ।
 ख) 'तोतापल्ली' आम मीठा होता है।
 ग) 'रायपुर' की बिछिया प्रसिद्ध है।
 घ) 'राजिम' संगम में नहा कर लोग आनंदित होते हैं।

जैसे :- (क) घर में रोजे तीन लीटर दूध लाग्थे।
 (ख) मोर पियास दु गिलास पानी ले बुझाही।
 (ग) घर ले स्कूल दु किलामीटर हे।
 (घ) ये लुगरा ह पाँच मीटर लम्हरी हे।

4. संकेतवाचक विशेषण :- कोनो डाड़ में 'सर्वनाम' सब्द बिसेसन जइसे बाले जाथे, त ओला संकेत वाचक बिसेसन कहाथे। येमा कोनो दूसर के इसारा मिलथे।

जइसे :

क) उहाँ 'कोन' गावत हे ?
 ख) 'ये' कुरथा मोर भाई के आय।
 ग) 'काखर' घोड़ा जावत हे।
 घ) 'ओला' रायपुर जाये बर परही।

5. व्यक्तिवाचक विशेषण : जने सब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा मन ले बनथे, ओला व्यक्तिवाचक बिसेसन केहे जाथे।

जइसे :

क) 'मेहा' मैत्रीबाग घूमे बर जावत हौं।
 ख) 'तोतापल्ली' आमा मीठ होथे।
 ग) 'रायपुर' के बिछिया जग जाहिर हे।
 घ) 'राजिम' संगम में असनान ले मनखेमन मगन होथें।

क्रिया

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
<p>जिन शब्दों से किसी कार्य के होने अथवा करने का बोध होता है, उन शब्दों को क्रिया कहते हैं। जैसे : गाना, नाचना, खेलना, चलना, जागना, चढ़ना, तैरना आदि</p> <p>प्रकार : क्रिया दो प्रकार की होती है :-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1) सकर्मक 2) अकर्मक <p>आइए, इनकी परिभाषा और भेद को जानें।</p> <p>1) सकर्मक क्रिया :- जब किसी वाक्य में क्रिया के साथ कर्म लगा रहता है, तो उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे :- क) मैं ढोल बजा रहा हूँ। ख) गीता पानी ला रही है। ग) रमेश आम खा रहा है। घ) मीना केला खा रही है।</p> <p>2) अकर्मक क्रिया :- जब किसी वाक्य में क्रिया के साथ कर्म नहीं होता है, तो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे :- क) मैं नहाता हूँ। ख) वह खाता है। ग) बच्चा खेलता है। घ) मैं लिखता हूँ।</p>	<p>जेन सब्द ले कोनों काम होय नइ ते करे के बोध, जानबा होथे, ओला क्रिया कहिथे। जइसे: गाबो, नाचबो, खेलबो, रंगबो, जागबो, चढ़बो, तउरबो 'क्रिया' दु किसम के होथे -</p> <ol style="list-style-type: none"> 1) सकर्मक 2) अकर्मक <p>आवव, होकर परिभाषा अऊ भेद ल जानन।</p> <p>1) सकर्मक क्रिया :- कोनो डाड़ मं क्रिया के संग कर्म लगे रहिथे, त ओला सकर्मक क्रिया कहिथें। जइसे : क) मेहा ढोल बजावत हौं। ख) गीता पानी लावत हे। ग) रमेश आमा खावत हे। घ) मीना केरा खावत हे।</p>